प्रभात

सुभारती

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

76 साल बेमिसाल

www.subhartimedia.com | लखनऊ, बुधवार, 22 अप्रैल 2020, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 08 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित

कोरोना वायरस: पुरुषों को खतरा ज्यादा -8

पृथ्वी दिवस: कोरोना महामारी से पर्यावरण पर प्रभाव

लखनऊ-प्रभात

जैसा कि हम जानते हैं कि 22 अप्रैल, 1970 जो संयुक्त राज्य अमेरिका में पहला पृथ्वी दिवस पर्यावरण संरक्षण के रूप में दुनिया भर में मनाया गया जिसमें लगभग 20 मिलियन से अधिक लोग स्वच्छ और सुरक्षित रहने वाले पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए रैलियों प्रदर्शनों और गतिविधियों में भाग लेने के लिए एकत्र हुए और इस प्रयास के लिए धन्यवाद के साथ पर्यावरण संरक्षण एजेंसी की स्थापना की गई थी। इसके अलावा स्वच्छ वायु अधिनियम, स्वच्छ जल अधिनियम और लुप्तप्राय प्रजातियां अधिनियम सभी पेश किए गए और पारित किए गए। यह पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए आमूल परिवर्तन की शुरुआत थी जो दुनिया का सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष कार्य है।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक (तकनीक) प्रो. भरत राज सिंह का कहना है कि पृथ्वी दिवस पर विश्व स्तर पर पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव हेतु छोटे बच्चों को भी यह एहसास दिलाने आवश्यकता है कि वे पृथ्वी की रक्षा में भाग ले और इसे सुरक्षित बनाने हेतु जल संरक्षण पुनर्चक्रण और ऊर्जा की बचत। पर्यावरण की रक्षा में योगदान करे। विश्व के सबसे अधिक प्रदूषित 20 शहरों में से भारत के 10 शहरों जिनमें लखनऊ वाराणसी कानपुर गाजियाबाद आगरा जैसे उत्तर.प्रदेश के ही 7.शहर है जिसमें भारत की राजधानी दिल्ली भी उनमें से एक है। आज कोविड.19 के संक्रमण की वैश्विक महामारी के दौरान 28.दिनों के लाक.डाउन उप्रांत आज वाहनों के आवागमन रुकने व निर्माण कार्यों के ठप होने से प्रदूषण में अप्रत्याशित कमी आई है और आसमान नीला दिखने लगा है तथा कई लोग पहली बार हिमालय पर्वत स्पष्ट रूप से देख रहे हैं।

विश्लेषण

प्रो.भरत राज सिंह

कोविड–19 महामारी दुनिया भर के देशों पर कहर बरपा रही हैए जिसके कठोर अवरोध से अर्थव्यवस्था की गतिविधि को बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। जहां कोविड 19महामारी प्रकोप से दुनिया भर के देशों पर वैश्विक स्वास्थ्य संकट पैदा हुआ है वही पृथ्वी के पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव डाल रहा हैए क्योंकि राष्ट्र लोगों के आवागमन को प्रतिबंधित करते हैं। वैज्ञानिकों में एक बड़ा मतांतर देखा जा रहा है जो हवा की गुणवत्ता से निहित है। ऐसा लगता है कि महामारी से काफी प्रभावित देशो में वायु प्रदूषण में भारी कमी आ रही है. जैसे कि चीनए इटली स्पेन अमेरिका आदि जहां उद्योग विमानन और परिवहन के कारण पर्यावरण को पीसते रहें हैं।

वायु प्रदूषण में काफी गिरावट : दुनिया के कई हिस्सों में वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय गिरावट आई है. जैसे उपग्रहों के डेटा ने नाइट्रोजन डाइऑक्साइड एनओ 2 जैसी प्रदूषणकारी गैसों में महत्वपूर्ण गिरावट दिखाई है।

पानी एक बार फिर साफहुआ : दुनिया भर के कई देश न्यूयॉर्क में कार्बन डाइऑक्साइड जैसे वायु प्रदूषकों में 5. से 10: की गिरावट आई है। मीथेन उत्सर्जन में भी काफी गिरावट आई है। 35: के क्षेत्र में कुछ अनुमान के साथ ट्रैफ़िक का स्तर भी काफी नीचे है। कार्बन मोनोऑक्साइड के उत्सर्जन में भी 50: की कमी आई है।

कोयला दहन में कमी आने से प्रदूषण उत्सर्जन में गिरावट : कोरोनोवायरस के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर एक और प्रभाव कोयले की खपत में गिरावट से हुआ है। 2019 की ऊर्जा जरूरतों के लिए इसका लगभग 59: कमी आई है । इसके विपरीत वाणिज्यिक या शैक्षिक भवनों में कम लोगों के साथ उनकी ऊर्जा की खपत चौथाई से 30: तक कम होनी चाहिए। एयरबॉर्न पीएम 2ण्5 ;पार्टिकुलेट मैटर का स्तर मार्च की शुरुआत से मार्च के अंत तक 36: तक गिर गया है।

भारत में वायु गुणवत्ता में सुधार : पूरे देश ने 22 मार्च को जनता कर्फ्यू मनाया देश भर में वायु प्रदूषण के स्तर में महत्वपूर्ण गिरावट आई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार दिल्ली में वायु प्रदूषण 22 मार्च को दोपहर 1 बजे 126 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर था जो और दिनो के सापेक्ष लगभग आधा था। हालांकि व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और औद्योगिक गतिविधियों को बंद करने के बावजूद गाजियाबाद ग्रेटर नोएडा और नोएडा में प्रदूषण का स्तर खराब और मध्यम स्तर पर रहा। कोलकाता ने वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया। पश्चिम बंगाल मे दिन के दौरान शहर के सभी स्वचालित हवाई निगरानी स्टेशनों में पीएम 2ण्5 वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) संतोषजनक था।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि लाकडाऊन के कारण प्रदूषण में अप्रत्याषित कमी आई है और पेड.पौधो में हरियाली आ गई है तथा चिडिया भी दिखने लगी है। नदियों के पानी की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है और गंगा का पानी हरिद्वार मे पीने लायक हो गया है। इसका असर जलवायु सुधार में भी दिखने लगेगा। आज जब हम सुबह शाम घरो के बाहर खडे होते है तो शुद्ध हवा में सासे लेते है। इससे से दो.बातें उभर कर आती है कि मनुष्य यदि धरती में छेड.छाड एक सीमा तक करेगा तो प्रकृति उसे अच्छे जीवन.दान देती रहेगी अन्यथा प्रकृति अपने आप ही महामारी अथवा किसी दैविक आपदा के रूप में श्रृष्टि में विनाश लीला के साथ जन.जीवन समाप्त कर अपने को ठीक कर लेगी। आइये इस धरती.दिवस पर शपथ लें कि मानवता की रक्षा के लिये प्रकृति का संरक्षण रखेगे।